भूखी-पहाड़ी की बिल्ली

एड यंग, हिंदी: विदूषक

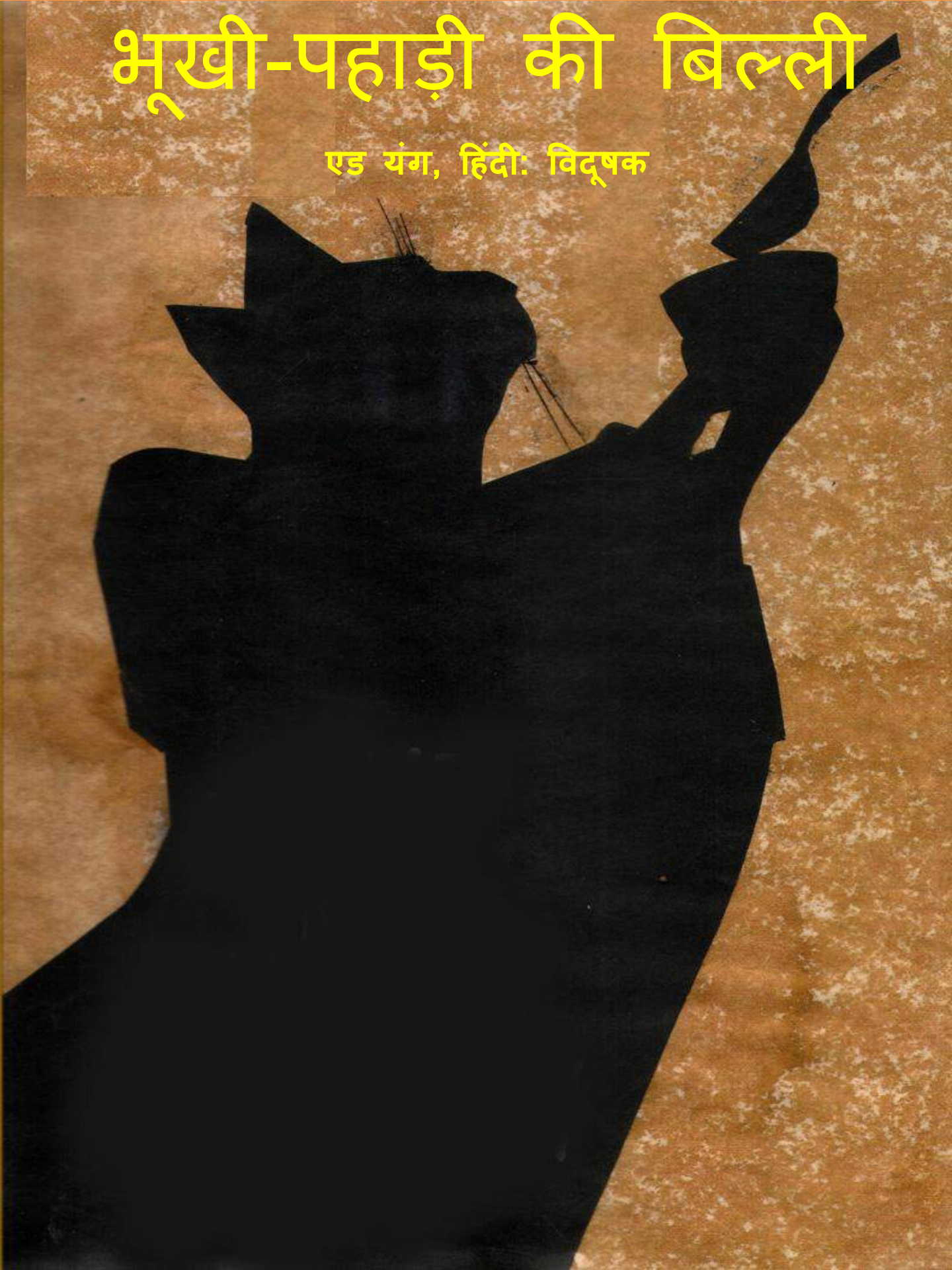

भूखी-पहाड़ी पर एक धनी बिल्ली-देव रहता है, जिसके पास सब कुछ होने के बावजूद उसे लगता है कि उसके पास पर्याप्त नहीं है. अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए उसने एक प्रसिद्ध आर्किटेक्ट से दुनिया का सबसे ऊंचा पगोडा बनवाया. वो दुनिया के सबसे मशहूर दर्जी से अपने लिए रेशम और सोने के धागों के कपड़े सिलवाता. वो सबसे नामीगिरामी बावर्ची से अपने लिए बेहतरीन पकवान बनवाता, जिसका चावल भगवान के खुद के खेतों से आता. इससे अधिक भला वो और क्या मांग सकता था?

पर जब सूखा पड़ा तब बिल्ली-देव को जिंदगी में पहली बार तंगी का एहसास हुआ. फिर वो पहाड़ी से उतरकर नीचे गया. वहां उसने जो कुछ देखा उससे उसका जीवन, सदा के लिए बदल गया.

कैल्डीकाट मैडल से सम्मानित एड यंग ने इस कहानी के सुन्दर चित्र बनाए हैं. हम बहुमूल्य चीज़ों का आनंद ले सकते हैं बिना उनका पीछा किए.

भूखी-पहाड़ी पर एक धनी बिल्ली-देव रहता था.
उसके पास सब कुछ था, फिर भी वो संतुष्ट नहीं था.

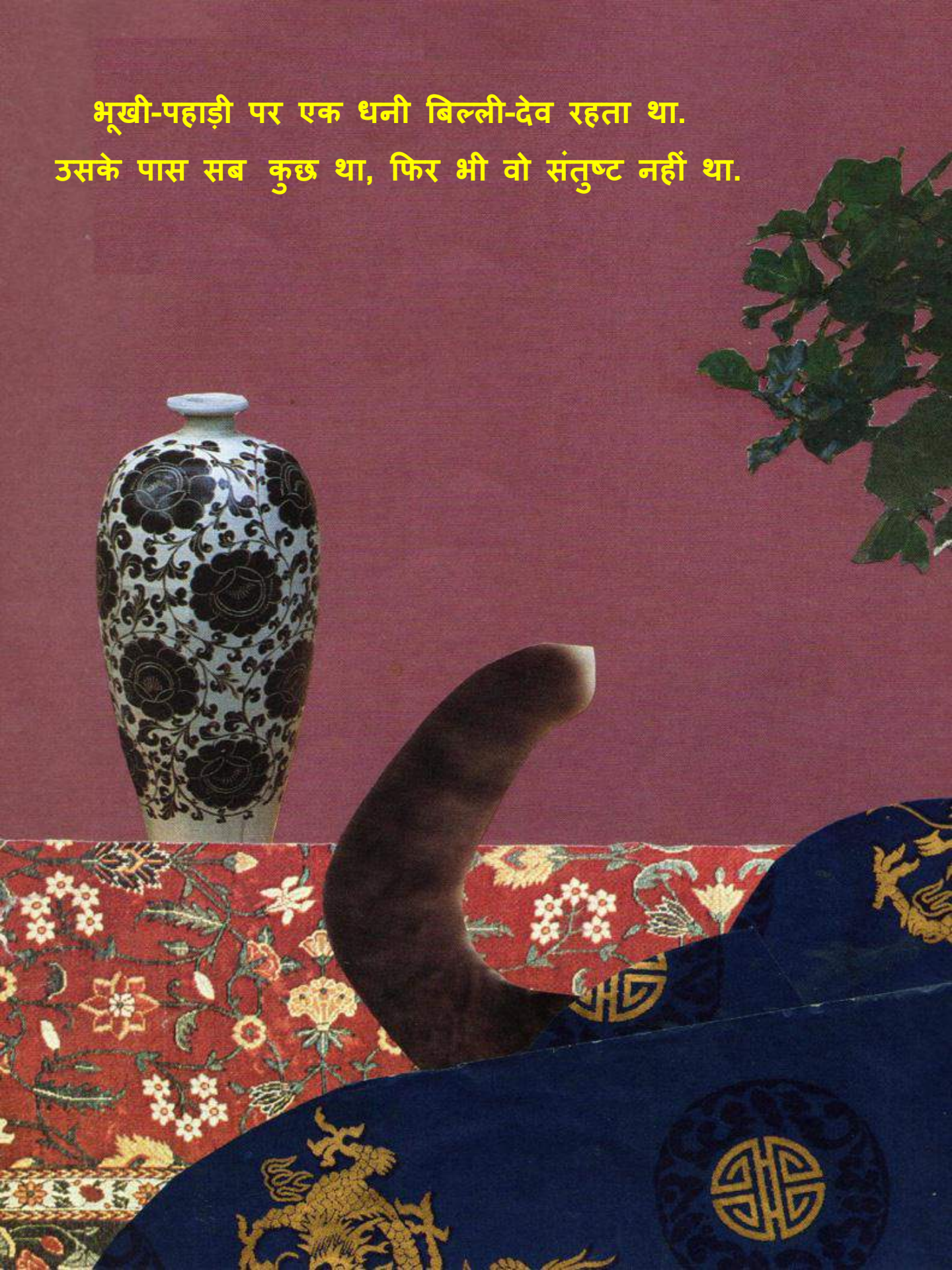

विश्व के सबसे कुशल मजदूरों ने उसके लिए दुनिया का सबसे ऊँचा पगोडा बनाया था. वो उसी में रहता था, हरेक इंसान से ऊपर.

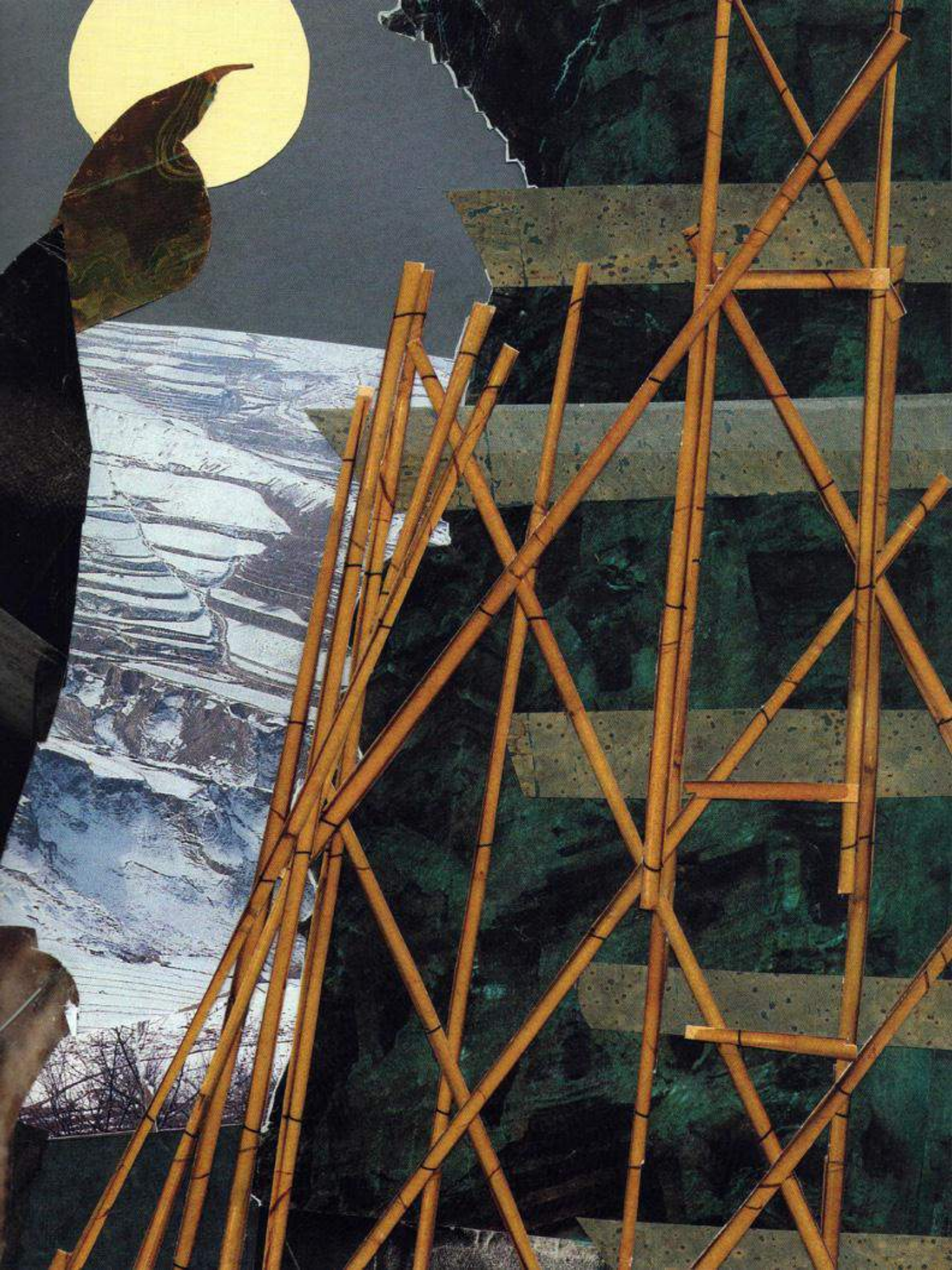

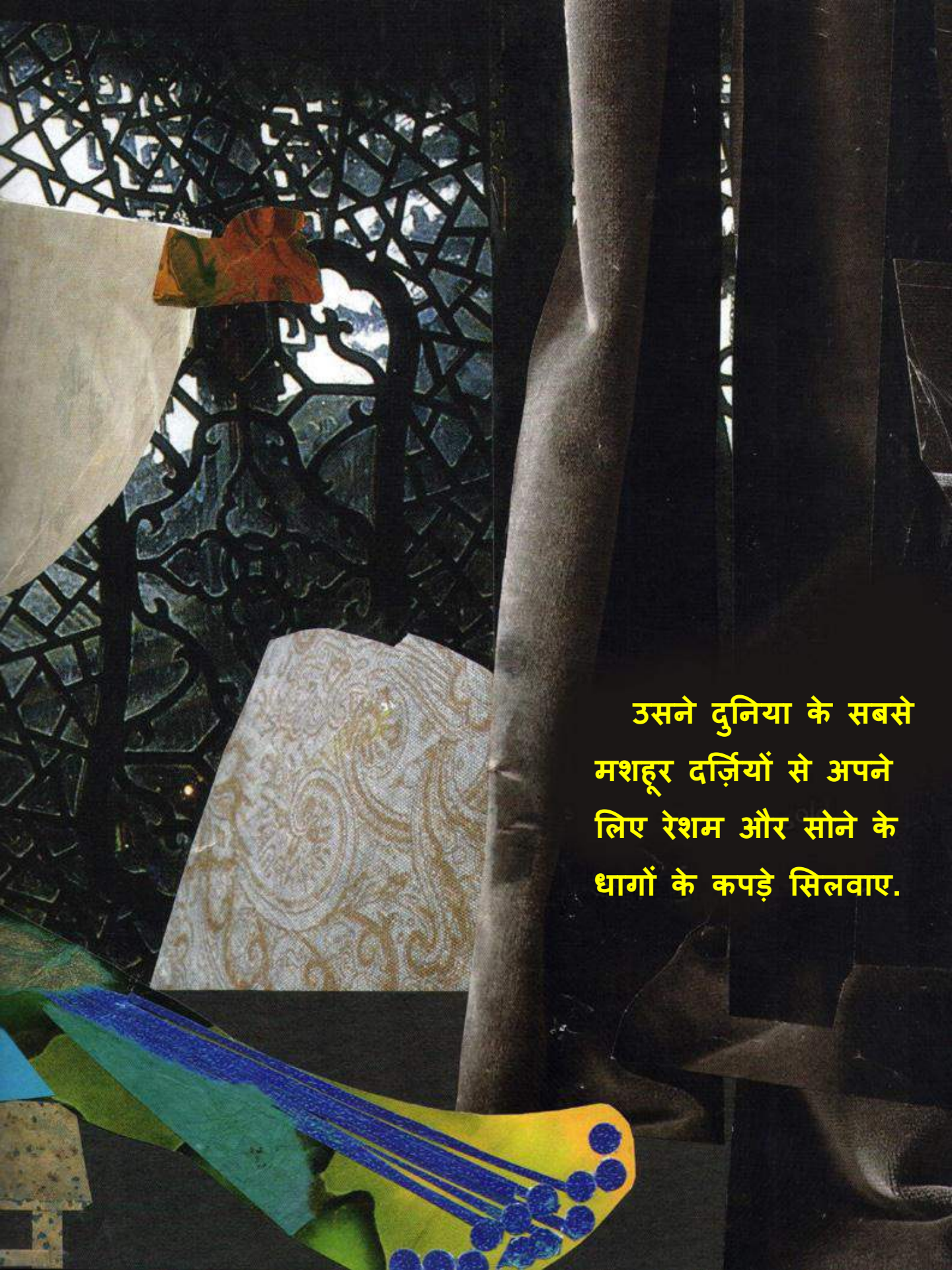

उसने दुनिया के सबसे मशहूर दर्ज़ियों से अपने लिए रेशम और सोने के धागों के कपड़े सिलवाए.

शिकारी उसे सबसे स्वादिष्ट गोश्त भेंट करते. सबसे नामी-गिरामी बावर्ची उसके लिए बेहतरीन भोजन और पकवान बनाते, जिनका चावल भगवान के खुद के खेतों से आता.

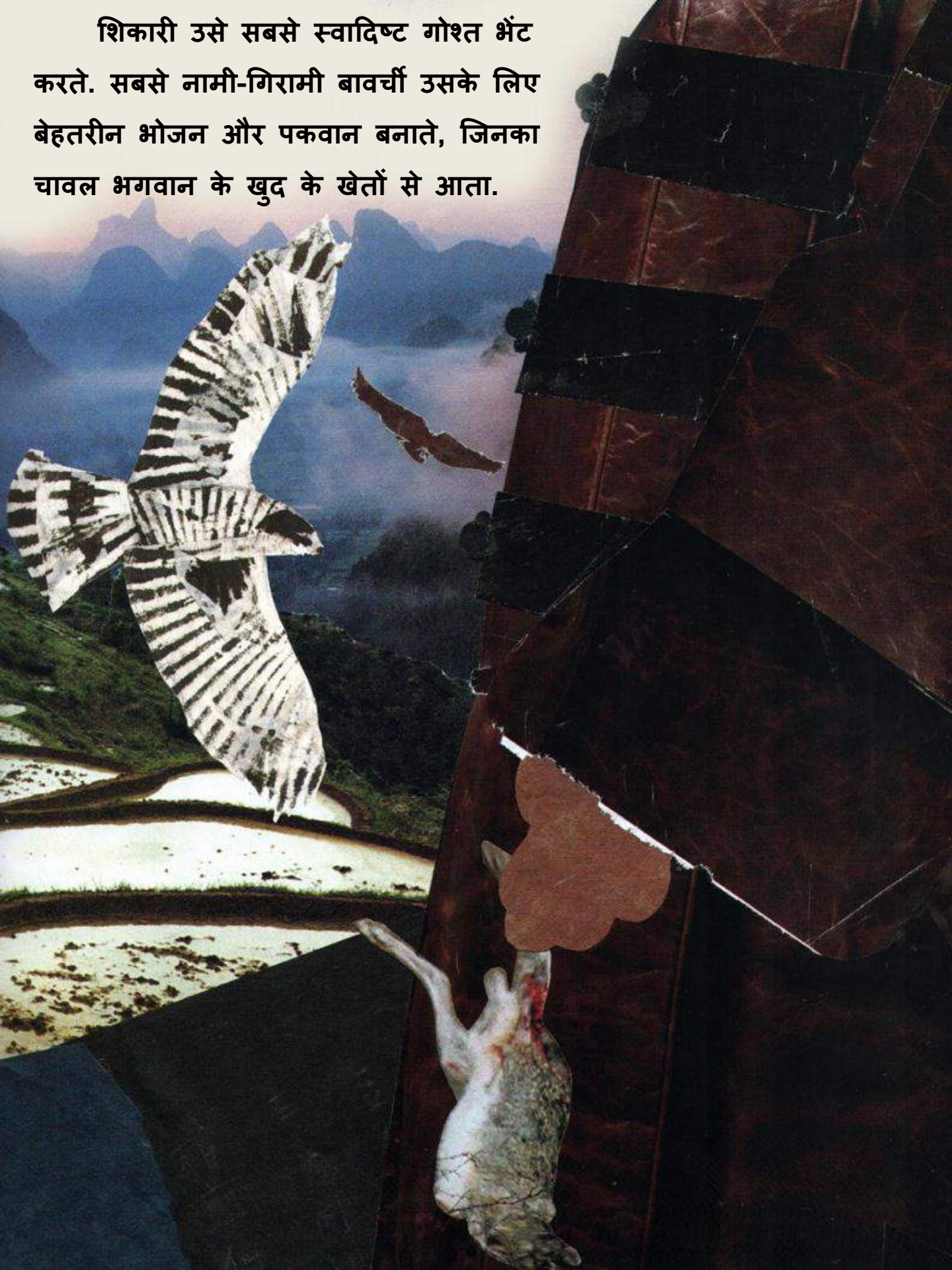

बिल्ली-देव के नौकर जब भोजन ख़त्म होने के बारे में उससे पूछते तो वो उनपर चिल्लाता. “क्या तुम अंधे हो? क्या तुम्हें नहीं दिखता कि भोजन का थाल अभी आधा खाली है? उसे उठा कर ले जाओ!”

भूखी-पहाड़ी अपने स्वादिष्ट चावल के लिए मशहूर थी. मजदूर उस धान को बहुत मेहनत और प्रेम से उगाते थे. फिर अन्य मजदूर उस धान को नदी के बहते पानी में धोते थे.

बिल्ली-देव अपने पगोडा में खड़ा-खड़ा उनपर दहाड़ता था, “जल्दी करो! अभी और बहुत धान काटना है!”

भूखी-पहाड़ी पर इसी तरह ज़िन्दगी चलती रही. फिर वहां पर सूखा पड़ा. हफ्ते, महीनों में बदले. महीने, साल में बदले. पर एक भी बूँद, बारिश नहीं हुई. किसानों की फसल तो क्या, बीज तक जल गया. बिल्ली-देव के खेत भी सूख गए. गाँववाले भूख से हाहाकार करने लगे. पर अपार दौलत के कारण बिल्ली-देव ने, अपनी अय्याशी ज़ारी रखी.

फिर अगले साल भी सूखा पड़ा. खाने के आभाव में सारे गांववाले, पहाड़ छोड़कर नीचे के शहर में चले गए. वहां पर रोज़ी-रोटी कमाना कुछ आसान था.

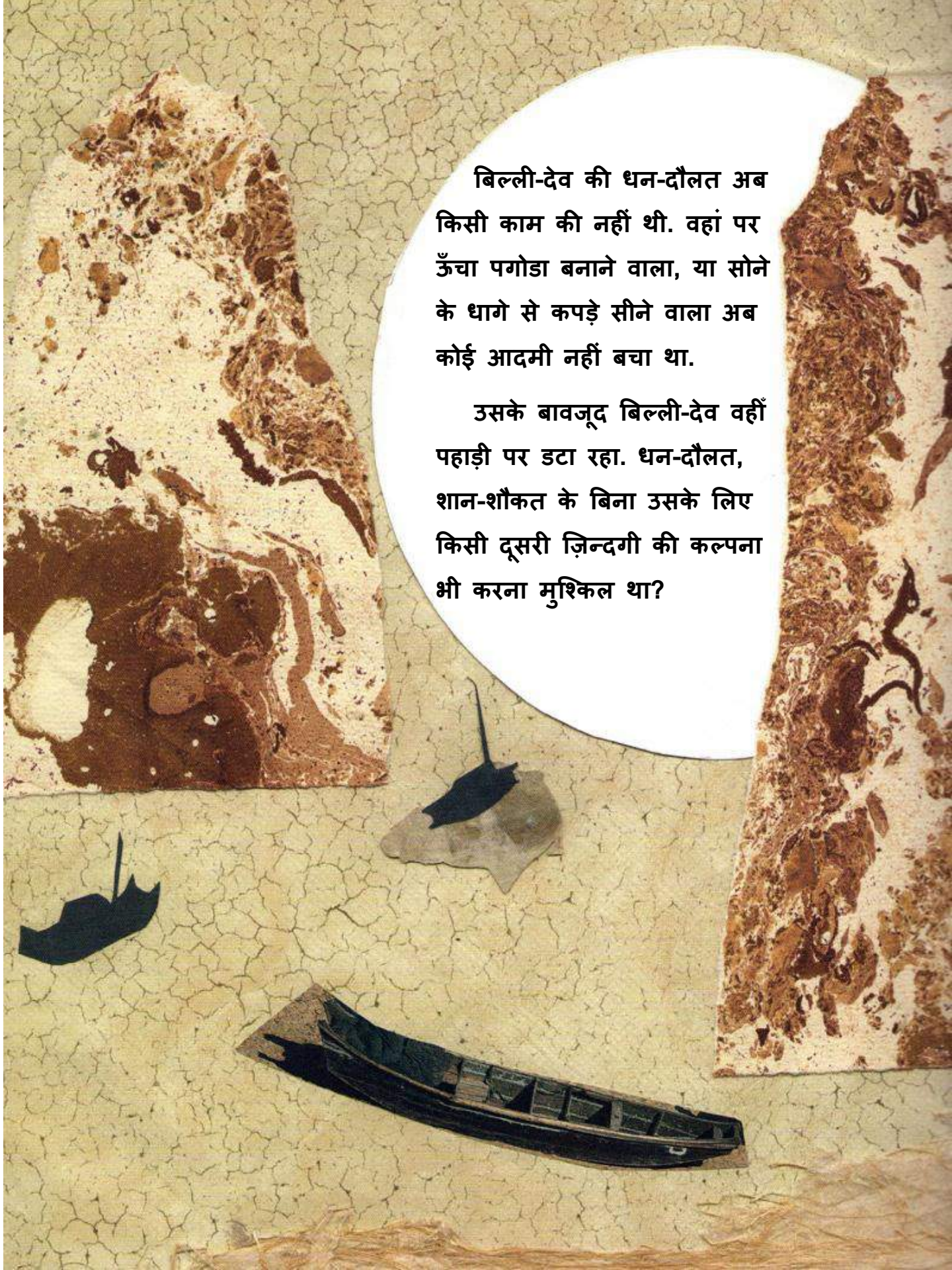

बिल्ली-देव की धन-दौलत अब किसी काम की नहीं थी. वहां पर ऊँचा पगोडा बनाने वाला, या सोने के धागे से कपड़े सीने वाला अब कोई आदमी नहीं बचा था.

उसके बावजूद बिल्ली-देव वहीँ पहाड़ी पर डटा रहा. धन-दौलत, शान-शौकत के बिना उसके लिए किसी दूसरी ज़िन्दगी की कल्पना भी करना मुश्किल था?

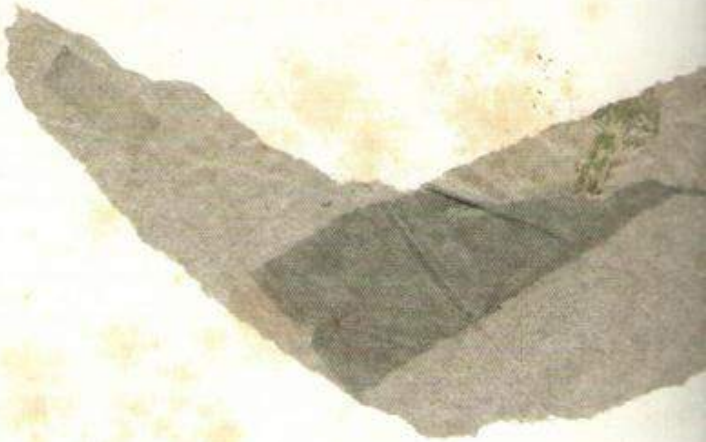

अंत में खाने के अभाव में, बिल्ली-देव को भी अपना घरबार और पहाड़ी छोड़नी पड़ी. उसके बाद वो अपने राज्य में भीख मांगने निकला. पर वहां उसकी मदद के लिए कोई बचा ही नहीं था.

इसलिए वो मीलों, अकेला भटकता रहा.

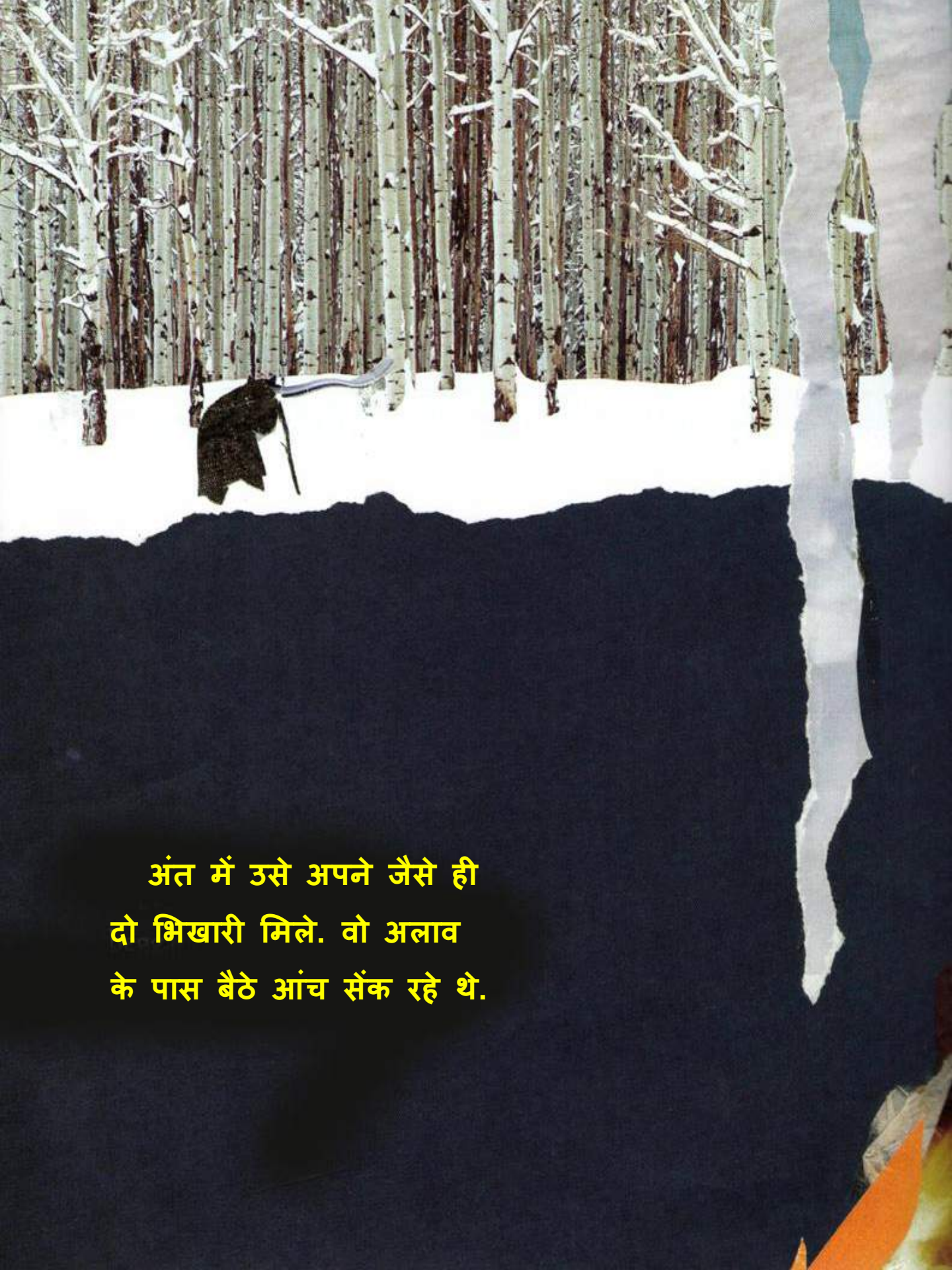

अंत में उसे अपने जैसे ही
दो भिखारी मिले. वो अलाव
के पास बैठे आंच सेंक रहे थे.

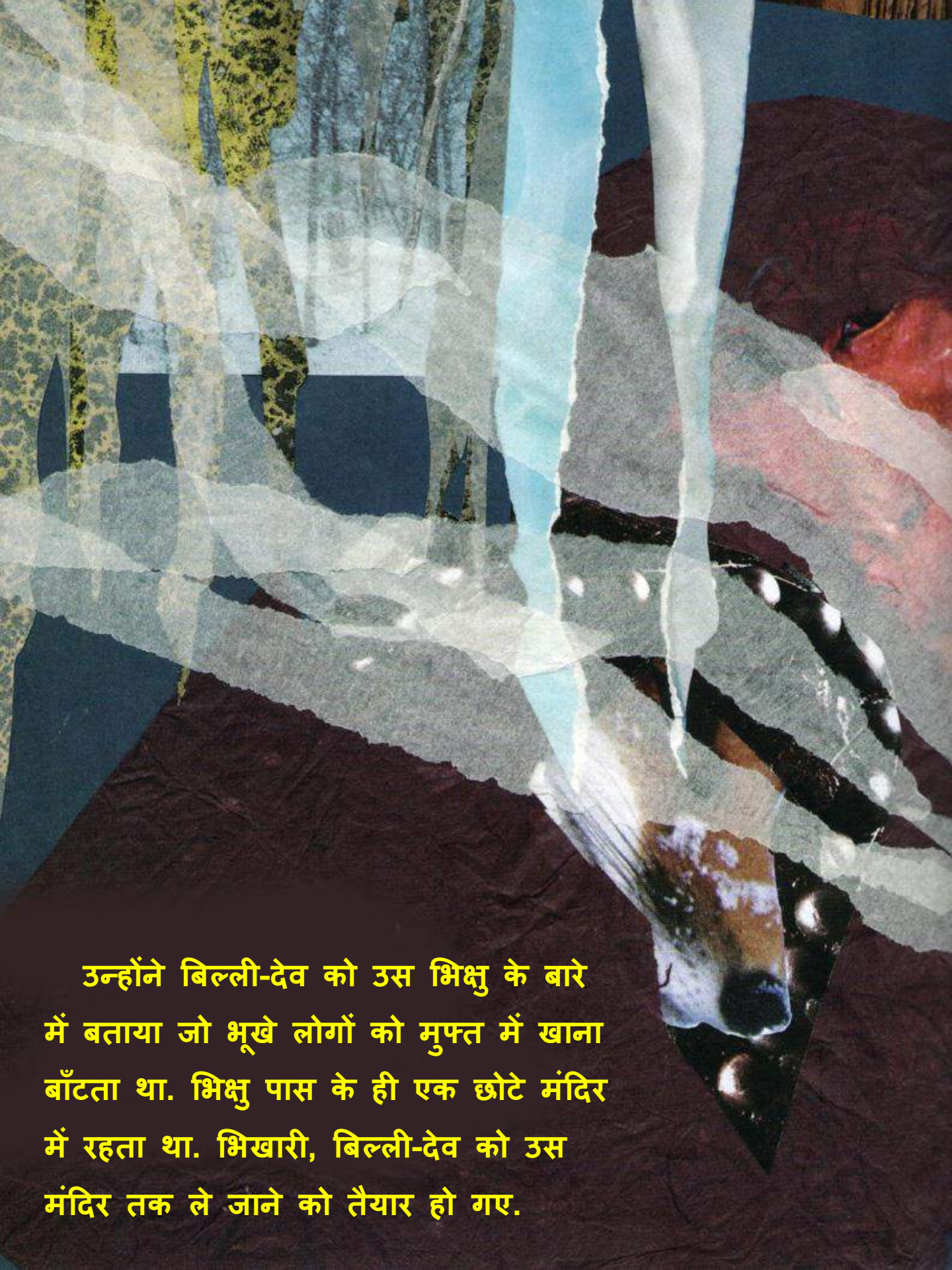

उन्होंने बिल्ली-देव को उस भिक्षु के बारे में बताया जो भूखे लोगों को मुफ्त में खाना बाँटता था. भिक्षु पास के ही एक छोटे मंदिर में रहता था. भिखारी, बिल्ली-देव को उस मंदिर तक ले जाने को तैयार हो गए.

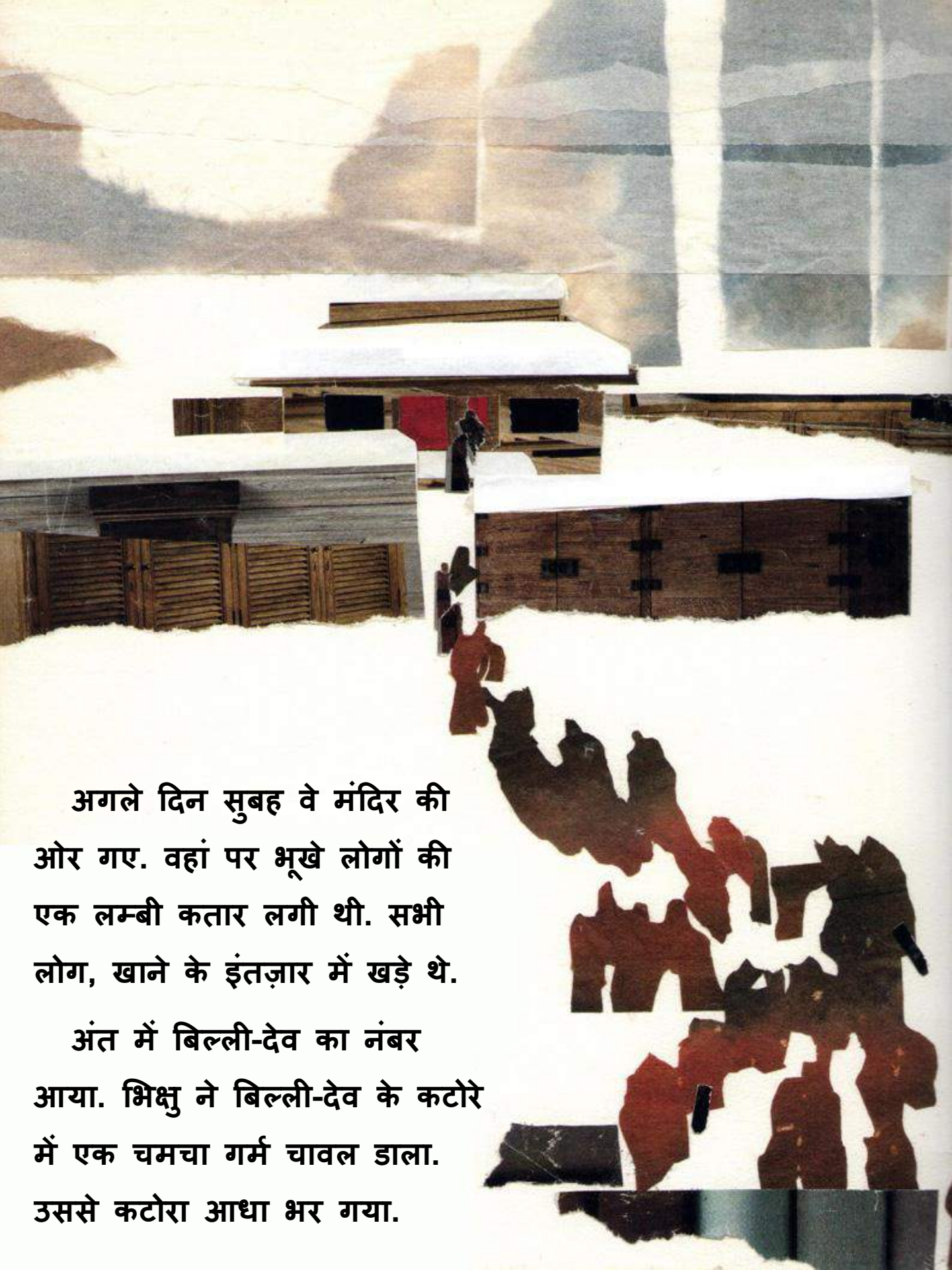

अगले दिन सुबह वे मंदिर की ओर गए. वहां पर भूखे लोगों की एक लम्बी कतार लगी थी. सभी लोग, खाने के इंतज़ार में खड़े थे.

अंत में बिल्ली-देव का नंबर आया. भिक्षु ने बिल्ली-देव के कटोरे में एक चमचा गर्म चावल डाला. उससे कटोरा आधा भर गया.

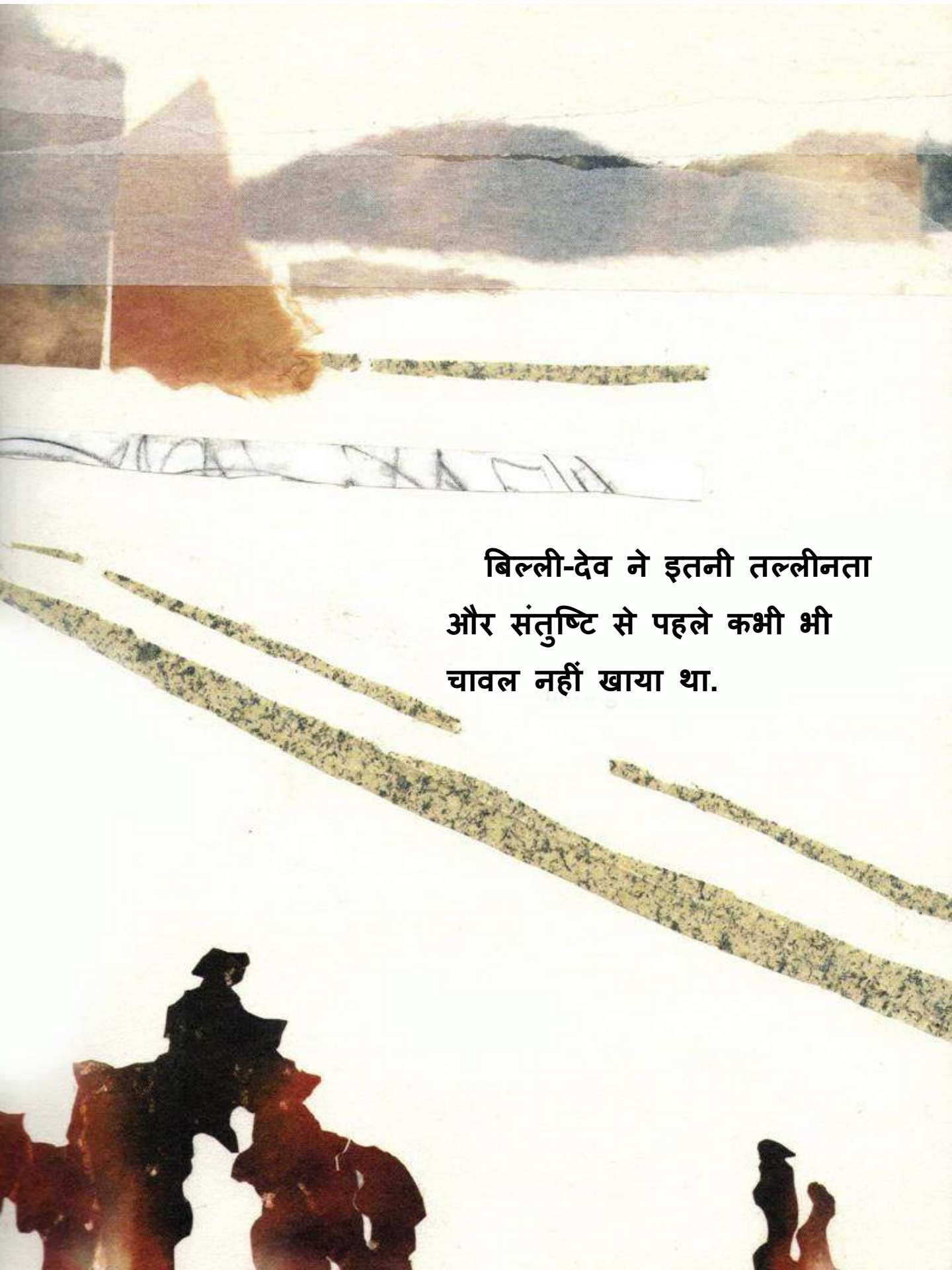

बिल्ली-देव ने इतनी तल्लीनता
और संतुष्टि से पहले कभी भी
चावल नहीं खाया था.

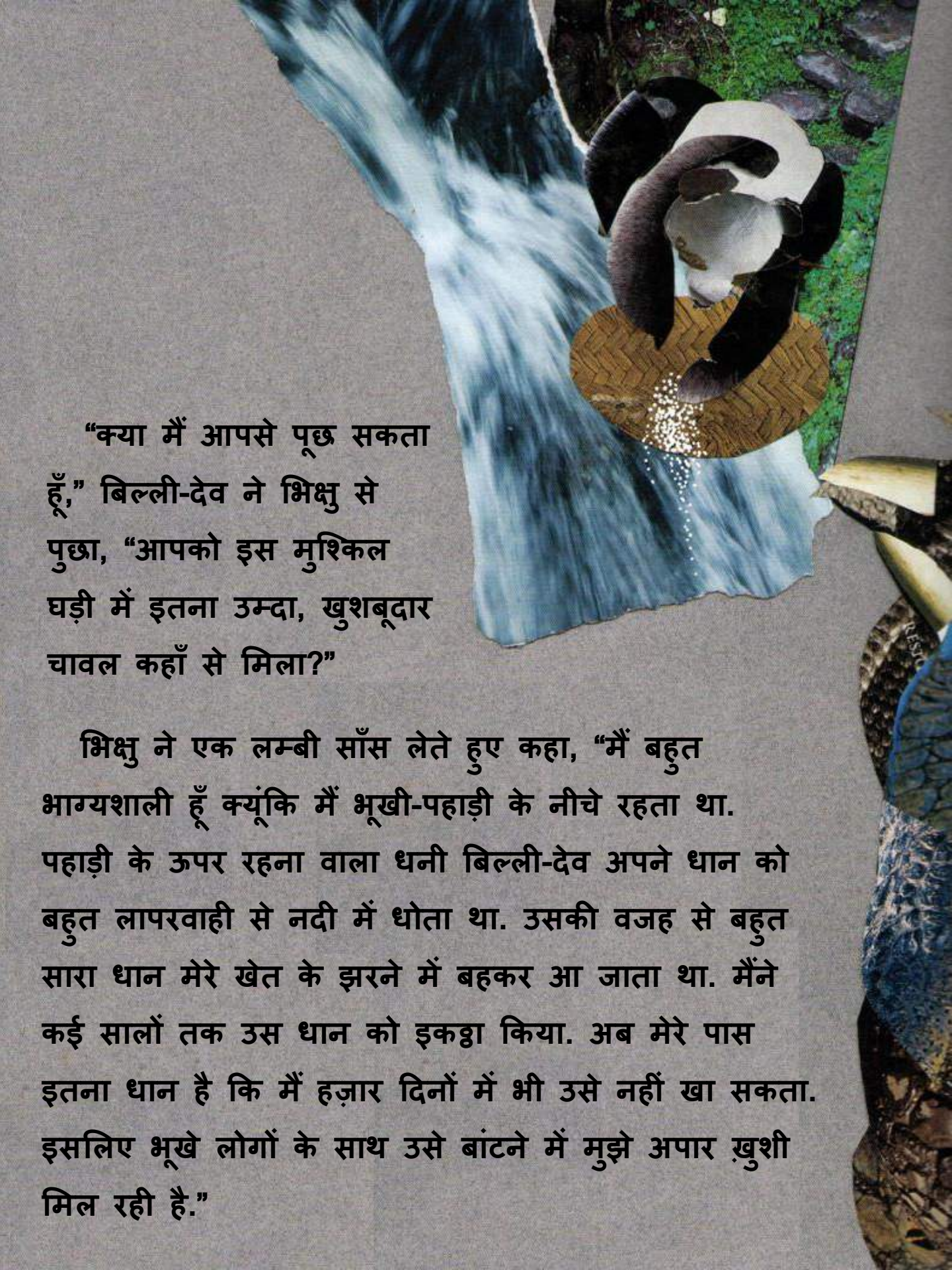

“क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ,” बिल्ली-देव ने भिक्षु से पुछा, “आपको इस मुश्किल घड़ी में इतना उम्दा, खुशबूदार चावल कहाँ से मिला?”

भिक्षु ने एक लम्बी साँस लेते हुए कहा, “मैं बहुत भाग्यशाली हूँ क्यूंकि मैं भूखी-पहाड़ी के नीचे रहता था. पहाड़ी के ऊपर रहना वाला धनी बिल्ली-देव अपने धान को बहुत लापरवाही से नदी में धोता था. उसकी वजह से बहुत सारा धान मेरे खेत के झरने में बहकर आ जाता था. मैंने कई सालों तक उस धान को इकट्ठा किया. अब मेरे पास इतना धान है कि मैं हज़ार दिनों में भी उसे नहीं खा सकता. इसलिए भूखे लोगों के साथ उसे बांटने में मुझे अपार ख़ुशी मिल रही है.”

बिल्ली-देव ने जब अपने खाली कटोरे को देखा, तब उसे पता चला कि उसने अपना फेंका हुआ चावल ही खाया था. ज़िन्दगी में उसे पहली बार सच्चे परोपकार का आशीर्वाद समझ में आया.

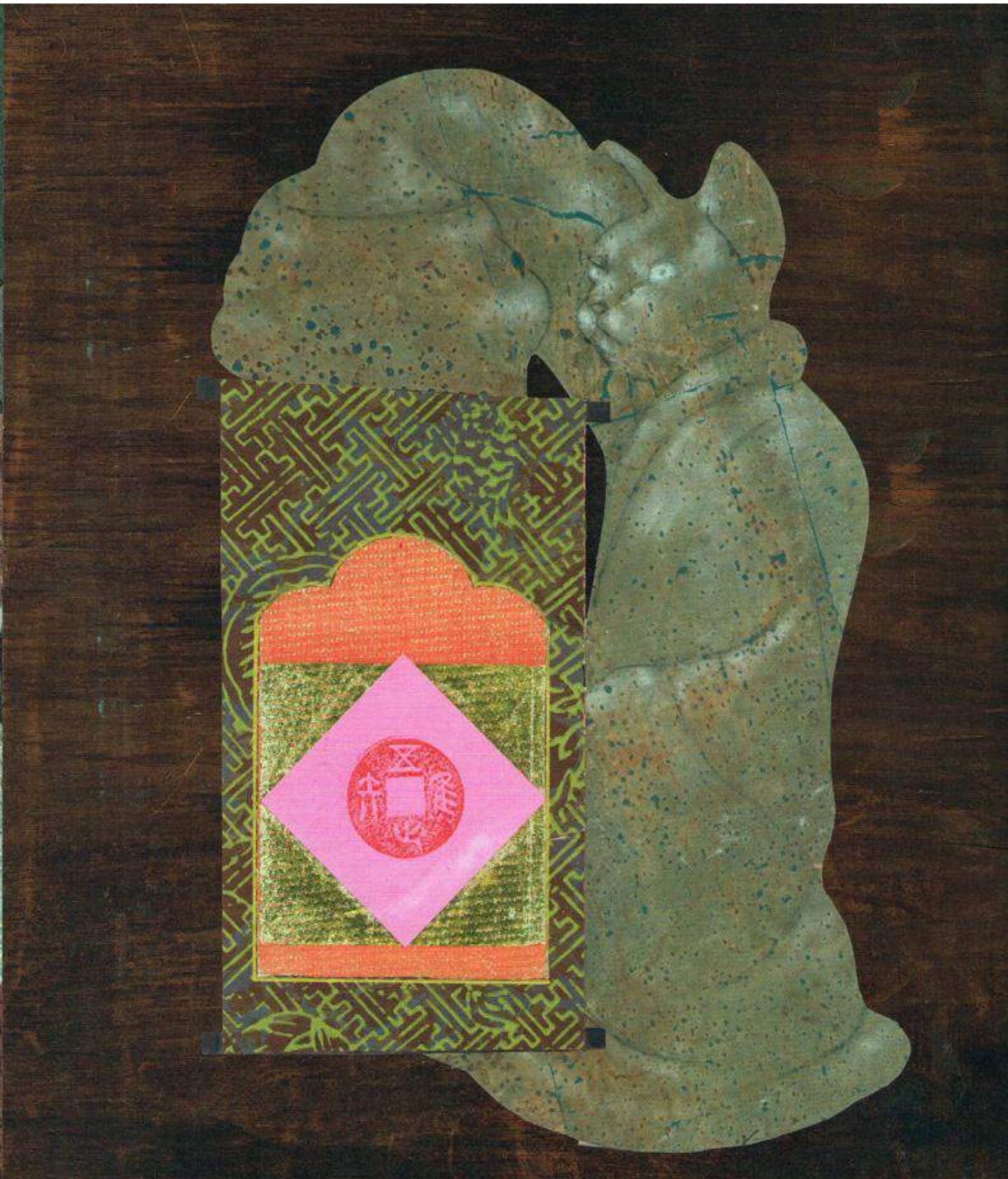

आज भी आपको भूखी-पहाड़ी की तलहटी में एक मंदिर दिखाई देगा. वहां पर आप बिल्ली के आकार के एक कटोरे को देखेंगे. उस कटोरे में से आप एक पर्ची निकाल सकते हैं जिसपर यह शब्द लिखे होंगे, "सिर्फ मुझे यह पता है कि पर्याप्त कितना होता है."

कैल्डीकाट मैडल से सम्मानित एड यंग ने 80 से अधिक बाल-पुस्तकों के लिए चित्र बनाए हैं. उन में से 17 पुस्तकें उन्होंने खुद लिखी हैं. एड यंग का जन्म, चीन में हुआ था. उनकी परवरिश शंघाई में हुई. बाद में वे हांगकांग में पढ़े. अपनी युवा अवस्था में एड यंग अमरीका में आर्किटेक्चर पढ़ने आए पर वहां उनका मन चित्रकला में लग गया. 1990 में उनकी पुस्तक *लोन-पो-पो* को कैल्डीकाट मैडल मिला. उनकी दो पुस्तकों – *द एम्परर एंड द काइट* और *सेवन ब्लाइंड माइस* को कैल्डीकाट हॉनर भी मिले हैं. वो न्यू-यॉर्क में रहते हैं.